1. विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो भी,
मरो,परंतु यों कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु–प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

संदर्भ–

प्रस्तुत उद्धरण राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'मनुष्यता 'कविता से अवतरित है।

प्रसंग–

प्रस्तुत कविता में कवि परोपकार के लिए जीने वाले व्यक्ति को ही मनुष्य बताते हुए मनुष्यता और परोपकार को पर्याय बताता है।

भावार्थ–

कवि कहते हैं कि इस बात पर भली भांति विचार कर लो कि तुम नश्वर हो तुम्हारी मृत्यु अवश्यंभावी है इसलिए कभी मृत्यु से मत डरो वरन् अपने लिए कभी ऐसी मृत्यु चुनो जिससे मरने के बाद सभी तुम्हें याद रखें ।यदि तुम्हें अच्छी मृत्यु प्राप्त नहीं हुई तो तुम्हारा जीवन और मरण दोनों ही बेकार है। जो अपने लिए नहीं जीता अर्थात् दूसरों के लिए जीता है वह अमर होता है। स्वयं चरते रहना अर्थात् केवल अपनी सुविधाओं का ध्यान रखना तो पशुओं की प्रवृत्ति होती है। केवल अपनी सुविधा का ध्यान रखने वाले व्यक्ति पशु के समान होते हैं। सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरे के लिए मरता है अर्थात् जो परोपकार करता है वही सच्चा मनुष्य है।

शिल्प–सौंदर्य–

- सच्चे मनुष्य के गुणों को बताया गया है।
- 'पशु–प्रवृत्ति'में अनुप्रास अलंकार है।
- 'आप आप' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- सरल ,प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली का प्रयोग है।